रविवार 23 जून, 2019

विषय — क्या ब्रह्मांड, मनुष्य सहित, परमाणु बल द्वारा विकसित है?

स्वर्ण पाठः II राजा 3 : 17, 18

"क्योंकि यहोवा यों कहता है, कि तुम्हारे साम्हने न तो वायु चलेगी, और न वर्षा होगी; तौभी यह नाला पानी से भर जाएगा; और अपने गाय बैलों और पशुओं समेत तुम पीने पाओगे। और यह यहोवा की दृष्टि में एक हल्की बात है।"

उत्तरदायी अध्ययन: अय्यूब 37 : 5, 6, 8, 9, 16, 17, 23

5 ईश्वर गरज कर अपना शब्द अद्भूत रीति से सुनाता है, और बड़े बड़े काम करता है जिन को हम नहीं समझते।

6 वह तो हिम से कहता है, पृथ्वी पर गिर, और इसी प्रकार मेंह को भी और मूसलाधार वर्षा को भी ऐसी ही आज्ञा देता है।

8 तब वनपशु गुफाओं में घुस जाते, और अपनी अपनी मांदों में रहते हैं।

9 दक्खिन दिशा से बवण्डर और उतरहिया से जाड़ा आता है।

16 क्या तू घटाओं का तौलना, वा सर्वज्ञानी के आश्चर्यकर्म जानता है?

17 जब पृथ्वी पर दक्खिनी हवा ही के कारण से सन्नाटा रहता है तब तेरे वस्त्र क्यों गर्म हो जाते हैं?

23 सर्वशक्तिमान जो अति सामर्थी है, और जिसका भेद हम पा नहीं सकते, वह न्याय और पूर्ण धर्म को छोड़ अत्याचार नहीं कर सकता।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 19 : 1-6

1 आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।
2 दिन से दिन बातें करता है, और रात को रात ज्ञान सिखाती है।
3 न तोकोई बोली है और न कोई भाषा जहां उनका शब्द सुनाई नहीं देता है।
4 उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूंज गया है, और उनके वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं। उन में उसने सूर्य के लिये एक मण्डप खड़ा किया है,
5 जो दुल्हे के समान अपने महल से निकलता है। वह शूरवीर की नाईं अपनी दौड़ दौड़ने को हर्षित होता है।
6 वह आकाश की एक छोर से निकलता है, और वह उसकी दूसरी छोर तक चक्कर मारता है; और उसकी गर्मी सब को पहुंचती है॥

2. I राजा 18: 1-3 (*से.*), 5, 41-45 (*से 1st.*), 46 (*से* ;)

1 बहुत दिनों के बाद, तीसरे वर्ष में यहोवा का यह वचन एलिय्याह के पास पहुंचा, कि जा कर अपने अपप को अहाब को दिखा, और मैं भूमि पर मेंह बरसा दूंगा।
2 तब एलिय्याह अपने आप को अहाब को दिखाने गया। उस समय शोमरोन में अकाल भारी था।
3 इसलिये अहाब ने ओबद्याह को जो उसके घराने का दीवान था बुलवाया।
5 और अहाब ने ओबद्याह से कहा, कि देश में जल के सब सोतों और सब नदियों के पास जा, कदाचित इतनी घास मिले कि हम घोड़ों और खच्चरों को जीवित बचा सकें,
41 फिर एलिय्याह ने अहाब से कहा, उठ कर खा पी, क्योंकि भारी वर्षा की सनसनाहट सुन पडती है।
42 तब अहाब खाने पीने चला गया, और एलिय्याह कर्म्मेल की चोटी पर चढ़ गया, और भूमि पर गिर कर अपना मुंह घुटनों के बीच किया।
43 और उसने अपने सेवक से कहा, चढ़कर समुद्र की ओर दृष्टि कर देख, तब उसने चढ़ कर देखा और लौट कर कहा, कुछ नहीं दीखता। एलिय्याह ने कहा, फिर सात बार जा।
44 सातवीं बार उसने कहा, देख समुद्र में से मनुष्य का हाथ सा एक छोटा बादल उठ रहा है। एलिय्याह ने कहा, अहाब के पास जा कर कह, कि रथ जुतवा कर नीचे जा, कहीं ऐसा न हो कि तू वर्षा के कारण रुक जाए।
45 थोड़ी ही देर में आकाश वायु से उड़ाई हुई घटाओं, और आन्धी से काला हो गया और भारी वर्षा होने लगी; और अहाब सवार हो कर यिज्रेल को चला।

46 तब यहोवा की शक्ति एलिय्याह पर ऐसी हुई; कि वह कमर बान्धकर अहाब के आगे आगे यिज्रेल तक दौड़ता चला गया।

3. अय्यूब 36 : 22, 24, 25, 27-31

22 देख, ईश्वर अपने सामर्थ्य से बड़े बड़े काम करता है, उसके समान शिक्षक कौन है?
24 उसके कामों की महिमा और प्रशंसा करने को स्मरण रख, जिसकी प्रशंसा का गीत मनुष्य गाते चले आए हैं।
25 सब मनुष्य उसको ध्यान से देखते आए हैं, और मनुष्य उसे दूर दूर से देखता है।
27 क्योंकि वह तो जल की बूंदें ऊपर को खींच लेता है वे कुहरे से मेंह हो कर टपकती हैं,
28 वे ऊंचे ऊंचे बादल उंडेलते हैं और मनुष्यों के ऊपर बहुतायत से बरसाते हैं।
29 फिर क्या कोई बादलों का फैलना और उसके मण्डल में का गरजना समझ सकता है?
30 देख, वह अपने उजियाले को चहुँ ओर फैलाता है, और समुद्र की थाह को ढांपता है।
31 क्योंकि वह देश देश के लोगों का न्याय इन्हीं से करता है, और भोजन वस्तुएं बहुतायत से देता है।

4. अय्यूब 37 : 14 (खड़ा)

14 …चुपचाप खड़ा रह, और ईश्वर के आश्चर्यकर्मों का विचार कर।

5. आमोस 4 : 13

13 देख, पहाड़ों का बनाने वाला और पवन का सिरजने वाला, और मनुष्य को उसके मन का विचार बताने वाला और भोर को अन्धकार करने वाला, और जो पृथ्वी के ऊंचे स्थानों पर चलने वाला है, उसी का नाम सेनाओं का परमेश्वर यहोवा है॥

6. मरकुस 1: 1, 9, 32-34 (*से* ;)

1 परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ।
9 उन दिनों में यीशु ने गलील के नासरत से आकर, यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया।
32 सन्ध्या के समय जब सूर्य डूब गया तो लोग सब बीमारों को और उन्हें जिन में दुष्टात्माएं थीं उसके पास लाए।

33 और सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हुआ।
34 और उस ने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुखी थे, चंगा किया; और बहुत से दुष्टात्माओं को निकाला॥

7. मरकुस 4 : 1, 35-41

1 वह फिर झील के किनारे उपदेश देने लगा: और ऐसी बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई, कि वह झील में एक नाव पर चढ़कर बैठ गया और सारी भीड़ भूमि पर झील के किनारे खड़ी रही।
35 उसी दिन जब सांझ हुई, तो उस ने उन से कहा; आओ, हम पार चलें,।
36 और वे भीड़ को छोड़कर जैसा वह था, वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले; और उसके साथ, और भी नावें थीं।
37 तब बड़ी आन्धी आई, और लहरें नाव पर यहां तक लगीं, कि वह अब पानी से भरी जाती थी।
38 और वह आप पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा था; तब उन्होंने उसे जगाकर उस से कहा; हे गुरू, क्या तुझे चिन्ता नहीं, कि हम नाश हुए जाते हैं?
39 तब उस ने उठकर आन्धी को डांटा, और पानी से कहा; "शान्त रह, थम जा": और आन्धी थम गई और बड़ा चैन हो गया।
40 और उन से कहा; तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं?
41 और वे बहुत ही डर गए और आपस में बोले; यह कौन है, कि आन्धी और पानी भी उस की आज्ञा मानते हैं?

8. भजन संहिता 46 : 1-3 (*से 1st .*), 4-7 (*से 1st .*), 10

1 परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक।
2 इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं;
3 चाहे समुद्र गरजे और फेन उठाए, और पहाड़ उसकी बाढ़ से कांप उठें॥
4 एक नदी है जिसकी नहरों से परमेश्वर के नगर में अर्थात परमप्रधान के पवित्र निवास भवन में आनन्द होता है।
5 परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं; पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता करता है।
6 जाति जाति के लोग झल्ला उठे, राज्य राज्य के लोग डगमगाने लगे; वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल गई।
7 सेनाओं का यहोवा हमारे संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है॥
10 चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूं। मैं जातियों में महान हूं, मैं पृथ्वी भर में महान हूं!

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 171 : 12-16

मनुष्य सहित ब्रह्मांड पर मन का नियंत्रण अब एक खुला प्रश्न नहीं है, बल्कि विज्ञान है। यीशु ने बीमारी और पाप को ठीक करने और मृत्यु की नींव को नष्ट करके दिव्य सिद्धांत और अमर मन की शक्ति का वर्णन किया।

2. 511 : 5-6, 23-3

दिव्य मन आध्यात्मिक सृजन की उच्चता, विशालता और अनंतता का समर्थन करता है।

नश्वर मन के लिए, ब्रह्मांड तरल, ठोस और एक समान है। आध्यात्मिक रूप से व्याख्या की गई, चट्टानें और पहाड़ ठोस और भव्य विचारों के लिए खड़े हैं। पशु और नश्वर रूपक रूप से नश्वर विचार का क्रम बढ़ाते हैं, बुद्धि के पैमाने पर बढ़ते हैं, मर्दाना, स्त्री या नपुंसक लिंग का रूप लेते हैं। स्वर्ग के खुले संघटन में पृथ्वी के ऊपर उड़ने वाले फव्वारे, मनोरम और दिव्य सिद्धांत, प्रेम की समझ से परे और ऊपर उठने की आकांक्षाओं के अनुरूप हैं।

3. 585 : 16-19

यूफ्रेट्स (नदी)। ब्रह्माण्ड और मनुष्य के बीच का दिव्य विज्ञान; ईश्वर का सच्चा विचार; एक प्रकार की महिमा जो आने वाली है; भौतिकी की जगह लेने वाले तत्वमीमांसा; धार्मिकता का शासन।

4. 597 : 27-29

हवा। जो कि सर्वशक्तिमानता और भगवान की आध्यात्मिक सरकार के आंदोलनों को इंगित करता है, जिसमें सभी चीजें शामिल हैं।

5. 512: 20-25

आत्मा अपने शुद्ध और परिपूर्ण विचारों के गुणन को आशीर्वाद देती है। एक मन के अनंत तत्वों से सभी रूप, रंग, गुणवत्ता और मात्रा निकलती है, और ये मानसिक होते हैं, दोनों मुख्य रूप से और दूसरे रूप में। उनकी आध्यात्मिक प्रकृति केवल आध्यात्मिक इंद्रियों के माध्यम से विवेकी है।

6. 240: 1-11

प्रकृति प्राकृतिक, आध्यात्मिक कानून और दिव्य प्रेम की आवाज लगाती है, लेकिन मानव की धारणा प्रकृति को गलत समझती है। आर्कटिक क्षेत्र, धूप उष्णकटिबंधीय, विशाल पहाड़ियों, पंखों वाली हवाओं, शक्तिशाली बिलों, बरामदों, उत्सव के फूल, और शानदार आकाश, - सभी मन की ओर इशारा करते हैं, वे जिस आध्यात्मिक बुद्धि को दर्शाते हैं। पुष्प प्रेरित देवता के चित्रलिपि हैं। सूर्य और ग्रह भव्य सबक सिखाते हैं। तारे रात को सुंदर बनाते हैं, और पत्ती स्वाभाविक रूप से प्रकाश की ओर मुड़ जाती है।

विज्ञान के क्रम में, सिद्धांत जिसमें यह दर्शाया गया है, उससे ऊपर है, सभी एक ही भव्य कार्यक्रम है।

7. 484: 13-15

भौतिक ब्रह्मांड नश्वर लोगों के जागरूक और अचेतन विचारों को व्यक्त करता है। शारीरिक बल और नश्वर मन एक हैं।

8. 192: 11-21

श्रद्धा शक्ति एक भौतिक विश्वास है, एक अंधा गर्भित बल है, इच्छा की संतान है और ज्ञान की नहीं, नश्वर मन की है और न ही अमर की। यह सिर का लंबा मोतियाबिंद, भयावह लौ, टेम्परेस्ट की सांस है। यह बिजली और तूफान है, यह सब स्वार्थी, दुष्ट, बेईमान और अशुद्ध है।

नैतिक और आध्यात्मिक आत्मा का हो सकता है, जो "अपनी मुट्ठी में हवा" रखता है; और यह शिक्षण विज्ञान और सद्भाव के साथ उच्चारण करता है। विज्ञान में, आपके पास भगवान के विपरीत कोई शक्ति नहीं हो सकती है, और भौतिक इंद्रियों को अपनी झूठी गवाही देनी चाहिए।

9. 293: 13-31

तथाकथित गैसें और बल, दिव्य मन की आध्यात्मिक शक्तियों के प्रतिरूप हैं, जिनकी सामर्थ्य सत्य है, जिनका आकर्षण प्रेम है, जिनका आसंजन और सामंजस्य जीवन है, होने के शाश्वत तथ्यों को नष्ट कर देता है। विद्युत भौतिकता का वह तीव्र अधिशेष है, जो अध्यात्म या सत्य के वास्तविक सार को उद्घाटित करता है, - महान अंतर यह है कि बिजली बुद्धिमान नहीं है, जबकि आध्यात्मिक सत्य मन है।

भूकंप, हवा, लहर, बिजली, अग्नि, सबसे अच्छा गति में व्यक्त - नश्वर मन का कोई वाष्पीभूत रोष नहीं है और यह तथाकथित मन स्व-नष्ट है। बुराई की अभिव्यक्ति, जो ईश्वरीय न्याय का प्रतिकार करती है, शास्त्रों में कहा गया है, "प्रभु का क्रोध।" वास्तव में, वे त्रुटि या पदार्थ के आत्म-विनाश को दर्शाते हैं और पदार्थ के विपरीत, आत्मा की ताकत और स्थायित्व को इंगित करते हैं। क्रिश्चियन साइंस सत्य और उसके वर्चस्व, सार्वभौमिक सद्भाव, ईश्वर की पवित्रता, अच्छाई और बुराई की बुराई को प्रकाश में लाता है।

10. 124: 3-6, 14-31

भौतिक विज्ञान (तथाकथित) मानव ज्ञान है, - नश्वर मन का एक नियम, एक अंध विश्वास, एक सैमसन अपनी ताकत का कफन। जब इस मानवीय विश्वास में इसका समर्थन करने के लिए संगठनों का अभाव है, तो इसकी नींव खत्म हो गई है।

ब्रह्मांड, मनुष्य की तरह, विज्ञान द्वारा अपने दिव्य सिद्धांत, ईश्वर से व्याख्या की जानी है, और फिर इसे समझा जा सकता है; लेकिन जब भौतिक अर्थों के आधार पर समझाया जाता है और विकास, परिपक्वता और क्षय के विषय के रूप में प्रतिनिधित्व किया जाता है, तो ब्रह्मांड, जैसे मनुष्य, है और होना चाहिए, एक रहस्य है।

आसंजन, सामंजस्य और आकर्षण मन के गुण हैं। वे दिव्य सिद्धांत से संबंधित हैं, और उस विचार-शक्ति के उपसंहार का समर्थन करते हैं, जिसने पृथ्वी को अपनी कक्षा में लॉन्च किया और गर्व की लहर से कहा, "यहां तक और इसके आगे नहीं।"

आत्मा सभी चीजों का जीवन, पदार्थ और निरंतरता है। हम ताकतों पर चलते हैं। उन्हें वापस ले लें, और सृजन को ढह जाना चाहिए। मानव ज्ञान उन्हें पदार्थ की ताकत कहता है; लेकिन दिव्य विज्ञान घोषित करता है कि वे पूर्ण रूप से दिव्य मन से संबंधित हैं, इस दिमाग में निहित हैं, और इसलिए उन्हें उनके सही घर और वर्गीकरण के लिए पुनर्स्थापित करता है।

11. 125: 21-30

मौसम समय और ज्वार, ठंड और गर्मी, अक्षांश और देशांतर के साथ आएंगे और जाएंगे। कृषक पाएंगे कि ये परिवर्तन उनकी फसलों को प्रभावित नहीं कर सकते हैं। "तू उसको वस्त्र की नाईं बदलेगा, और वह तो बदल जाएगा।" समुद्र की मछलियों और हवा के झोंकों के ऊपर वायुमंडल और महान गहराई में जलयान का प्रभुत्व होगा। खगोलशास्त्री अब सितारों की ओर नहीं देखेंगे, - वह ब्रह्मांड पर उनसे नज़र रखेगा; और फूलवाला अपने फूल को उसके बीज से पहले पाएगा।

12. 503: 10-15

सत्य के ब्रह्मांड में, पदार्थ अज्ञात है। त्रुटि का कोई भी दबाव वहां प्रवेश नहीं करता है। ईश्वरीय विज्ञान, ईश्वर का शब्द, त्रुटि पर अंधेरे के लिए कहता है, "ईश्वर सब में है," और हमेशा मौजूद प्रेम का प्रकाश ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6